AYUSHMAN
Spagyric Herbals

प्रयोग निर्देशिका

MODERN PRACTICE
OF SPAGYRIC HERBAL REMEDIES

जैसा कि इसके नाम से ही स्पष्ट है कि "स्पैजिरिक हर्बल रेमेडीज" प्रैक्टिस करने की एक नई विधि है। पारंपरिक तरीके से प्रैक्टिस करना वैकल्पिक मेडिसिन प्रैक्टिशनर्स के लिए बड़ा ही कठिन होता है, इसके कई कारण हैं –

1. सिध्दांतों का स्पष्ट ना होना ।
2. विधियों का जटिल होना ।
3. औषधि तैयार करने की अलग-अलग प्रक्रिया एवं और भी कई अन्य जटिलताओं का होना ।

हमारा प्रयास है कि सभी वैकल्पिक चिकित्सक जो समय के साथ किसी नए आविष्कारी बढ़लाव को स्वीकार एवं समर्थन करते हैं वे सभी **'The 7 Remedy System'** को अपने प्रैक्टिस में शामिल कर एक नया आयाम प्राप्त कर सकें।

समय साक्षी है कि किसी भी नया आविष्कारी पहल को विकसित होने में समय अवश्य लगता है । मुझे पूर्ण विश्वास है कि आने वाले समय में आप सभी के सहयोग से मेरे द्धारा उठाया गया यह कदम और अधिक प्रभावकारी एवं लोकप्रिय होगा ।

The 7 Remedy System

The 7 Remedy Sytem को 115 पौधों के Cohobation Essence से निर्मित किया गया है और इसे 7 औषधिय समूहों में विभक्त किया गया है, जिससे कि कोई भी वैकल्पिक चिकित्सक आसानी से इसे अपने प्रैक्टिस में शामिल कर सकें। यह विधि अन्य वैकल्पिक चिकित्सा पध्दतियों की तुलना में बहुत ही सरल आसान एवं सभी जटिलताओं से मुक्त है। इस सिस्टम में सिर्फ 7 औषधिय समूह होने के कारण औषधि चयन की प्रक्रिया एवं सफल चिकित्सीय अभ्यास बेहद आसान है।

Dr. Manoj Anand

Website: www.electrohomeo.com
Email: drmanoz111@gmail.com
Whatsapp: 08827775111

¡ àxâo quàªà §ý âÂàÀÎà

01. रेमेडीस को ग्लोब्युल्स, डिस्कीट्स अथवा डिस्टील्ड वाटर में तैयार किया जा सकता है।
02. किसी भी 2 या अधिक रेमेडीस को आपस में मिश्रित नहीं किया जाना चाहिए।
03. रेमेडीस का प्रयोग सीधे जीभ पर अथवा पानी के साथ किया जा सकता है
04. दी 7 रेमेडी सिस्टम की औषधियों को 3 मुख्य भागों में वर्गीकृत किया गया है–
    i. The 7 Remedy - Set A - (पॉजिटिव डायल्युशन) निगेटिव एवं एक्युट बीमारियों के लिए।
    ii. The 7 Remedy - Set B - (हायर डायल्युशन) पॉजिटिव एवं पुरानी बीमारियों के लिए।
    iii.The 7 Remedy - Set C- (बाह्य प्रयोग की औषधि)
05. दी 7 रेमेडी औषधिय मिश्रण तैयार करने की विधियाँ–
    i. Set A –
    *D4 (पॉजिटीव डायल्युशन) - 1:9 अनुपात
    90 बूंद : 30ml औषधिय मिश्रण, Set-A से तैयार करें।
    *D5 (लाईटर डायल्युशन) - 1:9 अनुपात, D4 से तैयार करें।
    30 बूंद : 30ml औषधिय मिश्रण, Set-A से तैयार करें।
    *D6 (डायल्युटेड) - 1:9 अनुपात, D5 से तैयार करें।
    3-5 बूंद :30ml औषधिय मिश्रण, Set-A से तैयार करें।
    ii. Set B – (हायर डायल्युशन) औषधि मिश्रण–
    * 1:49 अनुपात को प्राथमिकता दी जाती है।
    * समान्यतौर पर- 1 बुंद औषधि : प्रति 1 ml की अनुपात में मिश्रित किया जाना चाहिए।
    iii. Set C – बाह्य प्रयोग की औषधि तैयार करने की विधियाँ–
    * **1:9** अनुपात एवं **1:49** अनुपात ।
    आवश्यकता अनुसार दोनों अनुपात को प्राथमिकता दी जाती है।
06. यदि 1 ही औषधि दी जा रही हो तो–
    दवा खुराक की बारंबारता दिन में 3 बार से लेकर 6 बार तक दी जानी चाहिए।
07. यदि 2 या 2 से अधिक औषधि दी जा रही हो तो –
    दवा खुराक की बारंबारता प्रति औषधि दिन में 3 बार तक दी जानी चाहिए।
08. यदि 2 या 2 से अधिक औषधि दी जा रही हो तो –
    प्रत्येक औषधि के बीच कम से कम 1 घंटा का अवकाश अवश्य रखा जाना चाहिए ।
09. औषधि खुराक की सामान्य मात्रा 10-15 बूंद तक आधा कप पानी के साथ दी जानी चाहिए।
10. एकल औषधि की त्वरित खुराक –
    5 बूंद प्रति 15 मिनट के अवकाश पर दी जानी चाहिए ।
11. 2 या 2 से अधिक औषधियों की त्वरित खुराक–
    5-5 बूंद बारी-बारी से प्रति 15 मिनट के अवकाश पर दि जानी चाहिए ।
12. Vital-Remedy एक बहुउद्देशीय औषधि है अतः इस औषधि को मुख्य रुप से चिकित्सा में शामिल करने का प्रयास किया जाना चाहिए।
13. बाह्य प्रयोग की औषधि का प्रयोग –
    1. यदि एकल बाह्य औषधि का प्रयोग किया जा रहा हो तो दिन में 3 से 4 बार तक प्रयोग किया जाना चाहिए ।
    2. यदि 2 या 2 से अधिक बाह्य औषधि का प्रयोग किया जा रहा हो तो दिन में 2 से 3 बार प्रत्येक औषधि को बारी-बारी से प्रयोग किया जाना चाहिए।
14. बाह्य प्रयोग की औषधि की मात्रा–
    बाह्य प्रयोग की औषधि की मात्रा आवश्यकता अनुसार ली जानी चाहिए ।
15. जहाँ तक संभव हो कम से कम औषधियों का चुनाव करने का प्रयास किया जाना चाहिए ।

The 7 Remedy System

01. **Vital-Remedy -** इस औषधि समूह का मुख्य रुप से सभी प्रकार की चयापचयी एवं क्रियात्मक (Metabolic & Functional) गड़बड़ियों में प्रयोग किया जाता है। यह रक्त एवं रस का नियमन एवं शोधन करती है। इस औषधि का प्रभाव सम्पूर्ण अंगों पर होता है। इस औषधि का संबंध Vital / OD - Force (कोशिकाओं के अंदर विद्यमान जीवन शक्ति) से होता है। यह एक सर्वोपयोगी औषधि है अतः इसे इस सिस्टम की मुख्य औषधि के रुप में प्रयोग किया जाना चाहिए ।
    संबंधित रोग– सम्पूर्ण अंगों की क्रियात्मक गड़बड़ियों में– लीवर, किडनी, हृदय, त्वचा, हॉर्मोनल एवं नॉन-हॉर्मोनल ग्रंथियों, तंत्रिकातंत्र, रक्त एवं रस शोधन, विषहरण, संक्रमण आंत्रिक एवं पाचन दोष, मधुमेह, मोटापा, रक्तचाप, रोग-प्रतिरोधक क्षमता, वसावृध्दि, रक्ताल्पता इत्यादि

02. **Cell-Remedy -** इस औषधि समूह का मुख्य प्रभाव संरचनात्मक (Anatomical/Cell Deformability) गड़बड़ियों पर अधिक होता है। जब क्रियात्मक गड़बड़ियाँ आगे चलकर कोषिकाओं/ऊतकों की बर्बादी करने के स्तर पर पहुंच जाए अर्थात् संरचनात्मक रोग का रुप धारण कर लें तब इस औषधि समूह की अहम भूमिका होती है। Cell-Remedy एवं Vital-Remedy एक-दूसरे की पूरक रेमेडी समझा जाना चाहिए।
    संबंधित रोग – सभी प्रकार की क्रियात्मक गड़बड़ियों में उपयोगी- सुजन, लिवर सिरोसिस, लीवर की सुजन हृदय की सुजन, गर्भाशय की गांठ एवं सुजन, घाव, कैंसर मस्से, गोखरू, सिस्ट, फोड़ा, नासुर, पुराना जख्म, किसी भी तरह की गांठ, बवासीर, अंग वृध्दि इत्यादि

03. **Fluid-Remedy -** इस औषधि समूह का मुख्य प्रभाव हृदय एवं हृदय वाहनियों पर होता है। हृदय, धमनियों शिराओं एवं रक्त परिसंचरण तंत्र से संबंधित समस्त प्रकार की गड़बड़ियों में इस औषधि की प्रमुख भूमिका होती है। इस औषधि का रक्त-रस के शोधन एवं अंगों में रक्त संचार बराबर न हो पाने से उत्पन्न रोगों में मुख्य रुप से प्रयोग किया जाता है ।
    संबंधित रोग– रक्तचाप, बवासीर, घाव, हृदय की व्याधियां धमनी एवं शिरा सें संबंधित रोग, रक्तचाप, कोरोनरी हार्ट डिजीज, वेरीकोज वेन्स, रक्त संचरण की खराबी से उत्पन्न रोग, मस्तिष्क के रोग, चोट, रक्तस्राव, मासिक स्राव दोष रक्त-रस शुध्दिकरण, अनिंद्रा माइग्रेन, रक्तदोष, रक्ताल्पता सूजन इत्यादि ।

04. **Immune-Remedy -** यह औषधि रोग प्रतिरोधक तंत्र को मजबूती प्रदान करती है तथा ऑटो-इम्युन डिस-ऑर्डर्स में भी बहुत लाभकारी है । यह सभी प्रकार की ग्रंथियों के स्राव का नियमन करती है- हॉर्मोनल, नॉन-हॉर्मोनल लिम्फैटिक चैनल्स एवं ग्रंथियाँ इत्यादि । यह औषधि एक बहुत अच्छी रक्त एवं रस शोधक है तथा विजातीय सूक्ष्म जीवों से सुरक्षा प्रदान करती है। इस औषधि का प्रयोग पोषक एवं बल वर्धक के रुप में भी किया जाता है।
    संबंधित रोग– डायबिटिज, थॉयराइड, त्वचा रोग लिपिडेमिया, एलर्जी, सर्दी-जुकाम, सूजन, संक्रामक रोग लिम्फैटिक ग्रंथियों से संबंधित रोग, लिम्फ निर्माण एवं शुध्दिकरण, ऑटो इन्युन डिसआर्डर से उत्पन्न रोग निर्बलता, कमजोरी, रक्त-रस शोधन इत्यादि ।

05. **Microbial-Remedy -** इस औषधि समूह का मुख्य प्रभाव हमारे शरीर में विद्यमान सूक्ष्म विजातीय जीवों पर होता है। इस औषधि में बहुत अच्छा प्राकृतिक एंटी-बायोटिक का गुण मौजुद होता है जैसे- एंटी-वायरल, एंटी-बैक्टेरियल, एंटी-सेप्टिक, एंटी-प्रोटोजोअल, एंटी-पैरासीटिक एंटी-वर्म इत्यादि । यह औषधि सभी प्रकार के संक्रामक रोगों में बहुत ही प्रभावकारी होती है तथा हमारे रोग-प्रतिरक्षा तंत्र को बल प्रदान करती है।
    संबंधित रोग – सभी प्रकार के संक्रामक रोग – त्वचा संक्रमण, संक्रामक ज्वर, कृमि रोग, हेपेटाइटिस, ट्युबर-कुलोसिस, छाती एवं गले का संक्रमण, सर्दी-जुकाम एलर्जिक संक्रमण, यौन संक्रमण, संक्रमण जनित, सुजन एवं दर्द इत्यादि ।

06. **Nerve-Remedy -** इस औषधि समूह का मुख्य प्रभाव हमारे तंत्रिका तंत्र पर होता है। यह औषधि तंत्रिका तंत्र के कार्यो में उत्पन्न व्याधियों को दूर करती है। यह औषधि हमारे तंत्रिका तंत्र एवं प्रतिरक्षा तंत्र को बल प्रदान करती है। यह औषधि तंत्रिकातंत्र एवं मस्तिष्क से संबंधित रोगों के प्रति अच्छा प्रभाव रखती है। इस औषधि का कार्यक्षेत्र बहुत विस्तृत होता है क्योंकि हमारे शरीर के सभी कार्य प्रणाली तंत्रिकातंत्र के माध्यम से ही संचालित होती है।
    संबंधित रोग– बुखार, मांसपेशी एवं नसों का दर्द, संक्रमण तंत्रिकातंत्र एवं सस्तिष्क के रोग, दौरा रोग, मुर्छा रोग, तंत्रिका तंत्र की कमजोरी, स्पाज्म, बेचैनी, अनिद्रा, माइग्रेन,

07. **Respiro-Remedy -** इस औषधि समूह का मुख्य प्रभाव श्वसन तंत्र की सम्पूर्ण ब्याधियों चाहे वह क्रियात्मक / संरचनात्मक अथवा संक्रामक / असंक्रामक ही क्यों ना हों। यह औषधि फेफड़े, छाती एवं गला से संबंधित सभी रोगों में प्रभावकारी होती है। इस औषधि का कार्यक्षेत्र बहुत विस्तृत है जैसे- दर्द निवारक, ग्रंथियों के स्राव, निसंक्रामक, कफोत्सारक इत्यादि।
    संबंधित रोग– सर्दी-खाँसी, एलर्जी, दमा, न्युमोनिया, क्षय रोग, फेफड़ों में सूजन एवं जल संचय, श्वास नलिका की शोथ, कुकुर खाँसी, छाती में भारीपन, गला बैठना, श्वसन तंत्र में सुजन एवं संक्रमण, साइनस ग्रंथि की समस्या, गला एव फेफड़ों के सभी प्रकार के संक्रमण ।

टीप- विस्तृत जानकारी हेतु –
"Modern Practice of Spagyric Herbal Remedies" पुस्तक का अध्ययन अवश्य करें।

AYUSHMAN Spagyric Herbals

Website: www.electrohomeo.com, Email: drmanoz111@gmail.com, Whatsapp: 08827775111